NARA MAP

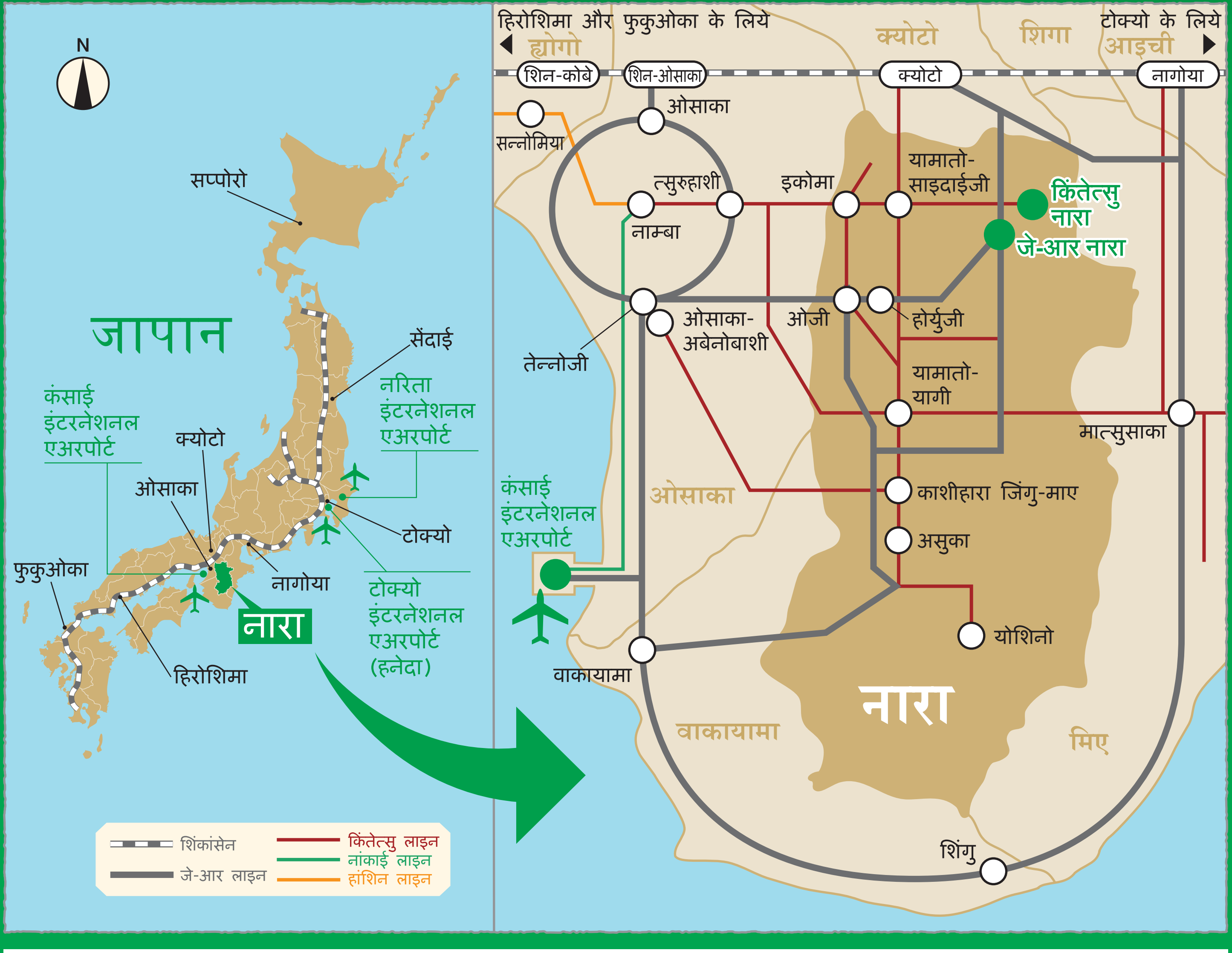
N
सप्पोरो
जापान
सेंदाई
नरिता इंटरनेशनल एअरपोर्ट
कंसाई इंटरनेशनल एअरपोर्ट
क्योटो
ओसाका
टोक्यो
फुकुओका
नागोया
नारा
टोक्यो इंटरनेशनल एअरपोर्ट (हनेदा)
हिरोशिमा
हिरोशिमा और फुकुओका के लिये
ह्योगो
क्योटो
शिगा
टोक्यो के लिये
आइची
शिन-कोबे
शिन-ओसाका
क्योटो
नागोया
ओसाका
सन्नोमिया
त्सुरुहाशी
इकोमा
यामातो-साइदाईजी
किंतेत्सु नारा
नाम्बा
जे-आर नारा
ओसाका-अबेनोबाशी
ओजी
होर्युजी
तेन्नोजी
यामातो-यागी
मात्सुसाका
कंसाई इंटरनेशनल एअरपोर्ट
ओसाका
काशीहारा जिंगु-माए
असुका
योशिनो
वाकायामा
नारा
वाकायामा
मिए
शिंगु
शिंकांसेन
जे-आर लाइन
किंतेत्सु लाइन
नांकाई लाइन
हांशिन लाइन

परिवहन सुविधा

कंसाई इंटरनेशनल एअरपोर्ट	लिमोजिन बस 85 मिनट.	किंतेत्सु नारा	लिमोजिन बस 5 मिनट.	जे-आर नारा					कुल मिलाकर लगभग 90 मिनट
	लिमोजिन बस 65 मिनट.	यामातो-यागी							कुल मिलाकर लगभग 65 मिनट
	जे-आर लिमिटेड एक्सप्रेस 30 मिनट.	तेन्नोजी	जे-आर यामातोजी रैपिड सर्विस 30 मिनट.	जे-आर नारा					कुल मिलाकर लगभग 60 मिनट
	नांकाई लिमिटेड एक्सप्रेस 30 मिनट.	नाम्बा	किंतेत्सु रैपिड एक्सप्रेस 40 मिनट.	किंतेत्सु नारा					कुल मिलाकर लगभग 70 मिनट
	जे-आर लिमिटेड एक्सप्रेस 30 मिनट.	ओसाका-अबेनोबाशी	किंतेत्सु लिमिटेड एक्सप्रेस 45 मिनट.	असुका	किंतेत्सु लिमिटेड एक्सप्रेस 35 मिनट.	योशिनो			कुल मिलाकर लगभग 110 मिनट
नरिता इंटरनेशनल एअरपोर्ट	जे-आर लिमिटेड एक्सप्रेस 60 मिनट.			टोक्यो	शिंकांसेन (नोजोमी) 140 मिनट.	क्योटो	जे-आर रैपिड 45 मिनट.	जे-आर नारा	कुल मिलाकर लगभग 245 मिनट
टोक्यो इंटरनेशनल एअरपोर्ट (हनेदा)	टोक्यो मोनोरेल हनेदा एक्सप्रेस 20 मिनट.	हामामात्सुचो	जे-आर लाइन 5 मिनट.				किंतेत्सु एक्सप्रेस 45 मिनट.	किंतेत्सु नारा	कुल मिलाकर लगभग 210 मिनट
क्योटो	जे-आर रैपिड 45 मिनट.	जे-आर नारा							कुल मिलाकर लगभग 45 मिनट
	किंतेत्सु एक्सप्रेस 45 मिनट.	किंतेत्सु नारा							कुल मिलाकर लगभग 45 मिनट

पूछताछ/सूचना के लिए सम्पर्क

कंसाई टूरिस्ट इंफॉर्मेशन सेंटर (कंसाई इंटरनेशनल एअरपोर्ट के अंदर)

फोन: +81-72-456-6025
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी, चीनी भाषा
समय: 8:30-20:30 (अप्रैल से अक्टूबर)
9:00-21:00 (नवम्बर से मार्च)

जे-आर नारा स्टेशन टूरिस्ट इंफॉर्मेशन सेंटर

फोन: +81-742-22-9821
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 9:00-17:00

नारा प्रीफेक्चर साइट-सीइंग इंफॉर्मेशन सेंटर

फोन: +81-742-27-2003
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 10:00-17:00

किंतेत्सु नारा स्टेशन टूरिस्ट इंफॉर्मेशन सेंटर

फोन: +81-742-24-4858
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 9:00-17:00

नारा सिटी साइट-सीइंग इंफॉर्मेशन सेंटर

फोन: +81-742-22-5595
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 9:00-21:00
(विदेशी भाषा में हेल्प रात 7 बजे तक)

सारुसावाइके टूरिस्ट इंफॉर्मेशन सेंटर

फोन: +81-742-26-1991
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 9:00-17:00

नारा सिटी टूरिस्ट इंफॉर्मेशन सेंटर

फोन: +81-742-27-2223
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 9:00-21:00
(विदेशी भाषा में हेल्प रात 7 बजे तक)

होर्युजी आई सेंटर

फोन: +81-745-74-6800
भाषायें: जापानी, अंग्रेजी
समय: 8:30-18:00
(विदेशी भाषा में हेल्प शाम 4 बजे तक)

प्रकाशक **नारा प्रीफेक्चर** 30 नोबोरिओजी-चो, नारा सिटी, 630-8501, जापान फोन: +81-742-27-8553 ई-मेल: iad-nara@mahoroba.ne.jp
http://www.pref.nara.jp/

*फोटोग्राफ: पब्लिक संस्था नारा प्रीफेक्चर विजिटर ब्युरो के सौजन्य से असुकाएन कम्पनी लिमिटेड, Kouichi Hayakawa, STUDIO38, द योमिउरी शिम्बुन, C.P.C. Photo (क्रम रहित)

*यात्रा के लिये दर्शाया गया समय केवल संभावित समय के आँकलन के लिये है.

*सुविधायों के लिये दर्शाया गया प्रवेश शुल्क आदि फरवरी 2012 के शुल्क के अनुसार है और ये बदल भी सकते हैं. इसीलिये, कृपया इसे यात्रा का प्लान करते समय अथवा यात्रा के समय अवश्य चेक कर लें.

奈良

भारत से सम्बंधित स्थान

NARA, JAPAN

नारा & भारत

नारा, जहाँ पर भारतीय बौद्ध कला का विकास हुआ

बौद्ध धर्म, भगवान बुद्ध के द्वारा भारत में स्थापित हुआ और चीन और कोरियाई प्रायद्वीप होते हुये जापान आया. बौद्ध धर्म के उपदेशों के साथ-साथ बौद्ध कला का भी प्रसार हुआ. बौद्ध कला लगातार बौद्ध धर्म के साथ जापान में बढ़ा और इस वृहद संस्कृति का विशिष्ट जापानी बौद्ध कला में काफी विस्तार नारा में हुआ.

“आप हमें नारा पार्क में मिल सकते हैं जहाँ पर कासुगा ग्रैंड श्राइन स्थित है. भारत में, दिल्ली के नेशनल जूलोजिकल पार्क में जापानी हिरण हैं जिनके पूर्वज एक बार जापान सरकार के द्वारा दिये गये थे !! हम एक बार अवश्य उनसे मिलना पसन्द करेगें ..”

विश्व धरोहर

कासुगा ग्रैंड श्राइन

Kasuga Taisha Shrine

विश्व में शान्ति और सभी लोगों की खुशी के लिये, यहाँ पर प्रार्थना किया जाता है

माउंट कासुगा को काफी समय से देवी-देवताओं के स्वर्ग से पृथ्वी पर आने के स्थान के लिये पूजा जाता है. इस पर्वत के कदमों में कासुगा ग्रैंड श्राइन, प्राचीन राजधानी हेइजो शहर के संरक्षक की तरह बनाया गया है.सिन्दूरी रंग से रंगे हुये भवन, विशाल जंगल की हरियाली में अत्यंत सुन्दर दिखती हैं. मई महीने में, श्राइन के आस-पास बहुत सुन्दर ढ़ग से विस्टीरिया की लतायें खिलती हैं. हिरण जो कि कासुगा ग्रैंड श्राइन में पधारे हुये देवी-देवताओं के सन्देशवाहक के रूप में जाने जाते है, श्राइन के ग्राउंड के अन्दर एवं आसपास चहलकदमी करते हुये देखे जा सकते हैं और ये एक अविस्मरणीय छाप छोड़ते हैं.

160 कासुगानो-चो, नारा सिटी ☎ 0742-22-7788 ◔ प्रमुख श्राइन समय: 6:30-17:30 (अप्रैल से अक्टूबर) 7:00-16:30 (नवम्बर से मार्च)
कोषागार हॉल 9:00-17:00 (प्रवेश का आखिरी समय शाम के 4 बजकर 30 मिनट तक है)
¥ प्रमुख श्राइन के स्पेशल दर्शन का शुल्क: 500 येन, कोषागार हॉल: 400 येन
🚆 जे-आर/किंतेत्सु नारा स्टेशन से कासुगाताइशा होंदेन की तरफ जाने वाली बस से कासुगाताइशा होंदेन बस स्टॉप से उतरते ही तुरंत है.

त्सुबोसाका-देरा मंदिर

Tsubosakadera Temple

सिल्क रोड(समुद्री व्यापार) की महक से भरपूर पत्थर की नक्काशी की भारतीय कला

यह मंदिर भगवान बुद्ध को समर्पित है जो आँख की बीमारी को ठीक करने की शक्ति रखते हैं. जापान में दूर-दूर से लोग यहाँ पर प्राचीन काल से ही पूजा करने के लिये आते हैं. द ग्रेट इंडियन कन्नोन बोधिसत्व की मूर्ति जो कि संगमरमर से बनी है और जिसका वजन 1200 टन और ऊँचाई 20 मीटर है, भारत और जापान के लोगों के सहयोग से बनाया गया था. यह कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों की सेवा के लिये है. इस मंदिर में कई और निर्माण कार्यों में लगे हुये सामान भारत से लाये गये हैं.

प्रसिद्ध भगवान बुद्ध की निर्वाण के समय की पत्थर की मूर्ति
द ग्रेट इंडियन कन्नोन बोधिसत्व के पत्थर की मूर्ति की तरह, ये 8 मीटर ऊँची पत्थर की मूर्ति, भारत और जापान के बीच एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत बनाया गया था. यह मूर्ति भगवान बुद्ध के निर्वाण में जाने का चित्रण करता है जो कि उन्होनें सम्पूर्ण उपदेशों को देने के बाद किया था.

द ग्रेट इंडियन स्टोन हॉल (अस्थि कलश रखने और सनातन पूजा-उपासना का स्थान)
इस विशालकाय स्टोन हॉल का निर्माण भारतीय और जापानी लोगों के सहयोग से किया गया था और यह भारत के अजंता की गुफाओं के मंदिर के शैली से बनाया गया है.

पत्थर पर भगवान बुद्ध की नक्काशी चित्र
दक्षिणी भारत के कार्कल में कई तरह के पत्थर को काटकर या तराशकर नक्काशी चित्र बनाये गये हैं. यहाँ पर भगवान बुद्ध के द्वारा चले गये रास्ते को 50 मीटर लम्बे और 3 मीटर ऊँचे जगह पर पत्थर को तराशकर नक्काशी चित्र बनाया गया है.

3 त्सुबोसाका, ताकातोरी-चो, नारा प्रीफेक्चर ☎ 0744-52-2016 साल-भर, प्रत्येक दिन खुला रहता है ◔ 8:30-17:00 ¥ 600 येन 🚆 किंतेत्सु त्सुबोसाकायामा स्टेशन से त्सुबोसाका-देरा को जाने वाली बस के अन्तिम स्टॉप से उतरते ही तुरंत है

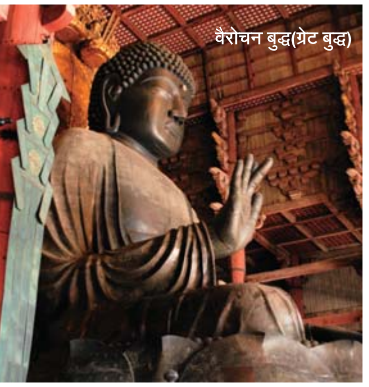

वैरोचन बुद्ध(ग्रेट बुद्ध)

विश्व धरोहर

तोदाईजी मंदिर

Todaiji Temple

एक बहुत बड़ा मंदिर जहाँ पर की बुद्ध की विशाल मूर्ति का राजकीय उद्घाटन समारोह, भारतीय ब्राह्मण आचार्य ने किया.

इस मंदिर की स्थापना आठवीं शताब्दी में महाराजा शोमु ने किया और ये आधुनिक नारा का एक महान प्रतीक स्थल है. विश्व के सबसे बड़े ग्रेट बुद्ध की मूर्ति जिसकी ऊँचाई लगभग 15 मीटर है, को दाईबुत्सु-देन हॉल में रखा गया है और ये विश्व का सबसे बड़ा लकड़ी का भवन है. इस विशाल मूर्ति का राजकीय उद्घाटन समारोह भारतीय ब्राहमण आचार्य बोधिसेन ने किया था.

शोसोइन कोषागार यह कोषागार तोदाईजी मंदिर के उत्तर-पश्चिम में स्थित है. शोसोइन कोषागार, खजाने के लिये भंडार-गृह है इसे अजेकुरा-जुकेरी लॉग केबिन स्टाइल से बनाया गया है. इसमें आठवीं शताब्दी से, समुद्र मार्ग से पर्शिया, भारत, और चीन से लाये गये प्राचीन कालीन वस्तुओं को रखा जाता है. प्रत्येक शरद ऋतु में, कोषागार के कुछ भाग को आम-लोगों के लिये, नारा के नेशनल म्युजियम में होने वाले “शोसोइन प्रदर्शनी” में दिखाया जाता है.

जोशी-चो, नारा सिटी ☎ 0742-26-2811 (इम्पीरिअल हॉउसहोल्ड एजेंसी शोसोइन ऑफिस)
शोसोइन कोषागार, निर्माण कार्यों के कारण आगंतुकों के लिये बंद है और बाहर का स्थान सन् 2014 ई. तक देखने के लिये उपलब्ध नही है. 🚆 जे-आर/किंतेत्सु नारा स्टेशन से अओयामा जुताकु की तरफ जाने वाली बस से इमाकोजी बस स्टॉप तक जाकर, वहाँ से 8 मिनट का पैदल रास्ता है.

मुक्ता जड़ी हुई लाल चन्दन की लकड़ी के पाँच तारो वाली बीवा वीणा
पाँच तारों वाली जापानी वीणा जिसकी शुरुआत भारत से हुई

406-1 जोशी-चो, नारा सिटी ☎ 0742-22-5511 (तोदाईजी मंदिर) 0742-20-5511 (तोदाईजी मंदिर म्युजियम) साल-भर, प्रत्येक दिन खुला रहता है(तोदाईजी मंदिर म्युजियम, कभी-कभी प्रदर्शनी के नवीनीकरण के दौरान, थोड़े समय के लिये बंद रहता है)
◔ ग्रेट बुद्ध हाल, होक्केदो हॉल(सनगात्सु-दो हॉल) ऑर्डिनेशन हॉल समय: 7:30-17:30 (अप्रैल से सितम्बर) 7:30-17:00 (अक्टूबर) 8:00-16:30 (नवम्बर से फरवरी) 8:00-17:00 (मार्च) तोदाईजी मंदिर म्युजियम समय: 9:30 से (प्रवेश का आखिरी समय तोदाईजी मंदिर के बंद होने से 30 मिनट पहले तक है)
¥ ग्रेट बुद्ध हाल, होक्केदो हॉल(सनगात्सु-दो हॉल) ऑर्डिनेशन हॉल, तोदाईजी मंदिर म्युजियम: प्रत्येक जगहों के लिये प्रवेश शुल्क 500 येन है. ग्रेट बुद्ध हाल और तोदाईजी मंदिर म्युजियम दोनों जगहों के लिये एक साथ प्रवेश शुल्क 800 येन है.
🚆 जे-आर/किंतेत्सु नारा स्टेशन के सिटी बस से दाईबुत्सुदेन कासुगा ताइशा माए बस-स्टॉप तक जाकर, वहाँ से 5 मिनट का पैदल रास्ता है. किंतेत्सु नारा स्टेशन से 20 मिनट का पैदल रास्ता है.
होक्केदो हॉल(सनगात्सु-दो हॉल) का इस समय मरम्मत हो रहा है और यह मार्च 2013 तक आगंतुकों के लिये बंद रहेगा.

विश्व धरोहर

याकुशीजी मंदिर

Yakushiji Temple

इस विख्यात मंदिर में आप भगवान बुद्ध को भारतीय गुप्त शैली में देख सकते हैं

इस मंदिर की स्थापना सन् 680 ई. में हुई और इसमें भाईसज्यागुरु की मूर्ति, पूजा के लिये प्रमुख मूर्ति है. यहाँ पर तरह-तरह के अत्यंत सुंदर जगह हैं जो कि मंदिर के भवन के अभिन्यास के शुरुआत से ही दिखने लगते हैं. भाईसज्यागुरु के मूर्तितल में रिकिजिन(आदिम मनुष्य) के चित्र नक्काशी किये हुये हैं और इसे सातवीं शताब्दी में बनाया गया था. इस नक्काशी की शुरुआत भारत से हुई थी. अवलोकितेस्वर बोधिसत्व की मूर्ति जो कि एक राष्ट्रीय संपदा है टोइंदो हॉल में है और ये भारतीय गुप्त शैली से बना है. नये बने हुये अहाते में आचार्य गेन्जो सन्जो का मंदिर है जो धर्म को जानने के लिये भारत गये थे और इस मंदिर का भारत से गहरा सम्बन्ध है. (पूर्वी पैगोडा का सन् 2011 से सन् 2018 के दौरान नवीनीकरण किया जा रहा है.)

बुद्धपद
नक्काशी कला से गौतम बुद्ध के पदचिन्ह को पत्थर पर तराशकर बनाया गया. भारत में मौजूद असली पदचिन्ह की प्रतिलिपि चीन आयी और उसके बाद यह जापान आया.

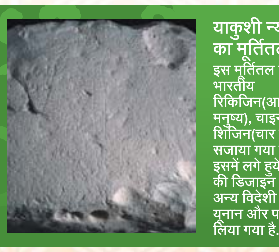

याकुशी न्योराई का मूर्तितल
इस मूर्तितल को भारतीय रिकिजिन(आदिम मनुष्य), चाइनीज शिजिन(चार देवता) से सजाया गया है और इसमें लगे हुये आभूषणों की डिजाइन आदि कई अन्य विदेशी देशों जैसे यूनान और पर्शिया से लिया गया है.

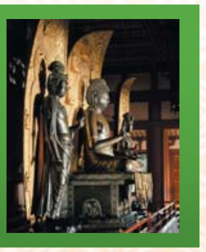

457 निशीनोक्यो-चो, नारा सिटी ☎ 0742-33-6001 साल-भर, प्रत्येक दिन खुला रहता है ◔ 8:30-17:00 (प्रवेश का आखिरी समय शाम के 4 बजकर 30 मिनट तक है) ¥ 500 येन (आम तौर पर) * 800 येन जब गेन्जो सन्जो कॉम्प्लेक्स देखने के लिये खुला रहता है
🚆 किंतेत्सु निशीनोक्यो स्टेशन से निकलते ही तुरंत है.

विश्व धरोहर

होर्युजी मंदिर

Horyuji Temple

प्रमुख हॉल के भित्तिचित्र, भारतीय प्रभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं

इसके कई भवन, लकड़ी के बने हुये विश्व के सबसे पुराने ढ़ाचे हैं. यह ज़ापान का सबसे पहला मंदिर है जिसको यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल के रूप में रजिस्टर किया. मंदिर के अहाते के अन्दर कई भवन और शिल्पकृति हैं जो कि जापान की बहुमुल्य और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक राष्ट्रीय सम्पत्ति है. प्रमुख हॉल के अन्दर बने हुये भित्तिचित्र, भारतीय संस्कृति के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं.

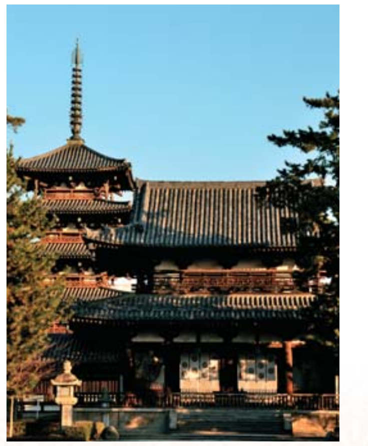

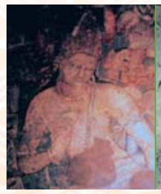

अजंता की गुफा के मंदिर के भित्तिचित्र

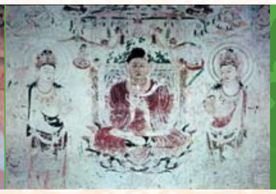

प्रमुख हॉल के भित्तिचित्र

प्रमुख हाल में भित्तिचित्र
मंदिर के सेंट्रल भवन के अन्दर के दीवालों पर बने हुये भित्तिचित्र, भारत के अजंता के गुफा के मन्दिरों में बने भित्तिचित्र की शैली के हैं. पारभासी कपड़ों के ओवरस्कर्ट पर किये गये रंग और चित्रण, अवश्य रूप से भारतीय संस्कृति के प्रभाव को इंगित करती हैं.

1-1 इकारुगा-चो, होर्युजीसन्नाई, नारा प्रीफेक्चर ☎ 0745-75-2555
◔ 8:00-17:00 (22 फरवरी से 3 नवम्बर तक) 8:00-16:30 (4 नवम्बर से 21 फरवरी तक) ¥ 1,000 येन
🚆 जे-आर होर्युजी स्टेशन से होर्युजीमॉन माए को जाने वाली बस के अन्तिम स्टॉप से उतरते ही तुरंत है. किंतेत्सु नारा स्टेशन से होर्युजी या ओजी एकीमाए की तरफ जाने वाली बस से होर्युजी माए बस स्टॉप तक जाकर, वहाँ से 5 मिनट का पैदल रास्ता है.

होक्केजी मंदिर

Hokkeji Temple

कन्नोन बोधिसत्व की ग्यारह चेहरे वाली मूर्ति, जिसे उस समय के परम्परा के अनुसार, एक भारतीय मूर्तिकार के द्वारा नक्काशी करके बनाया गया था.

होक्केजी मंदिर एक शाही विहार है और जिसे महारानी कोम्यो ने आठवीं शताब्दी में बनवाया था. ऐसा कहा जाता कि महारानी कोम्यो ने अपने देश में शांति और लोगों के कल्याण के लिये, अपने आपको इस मंदिर में समर्पित कर दिया था. ग्यारह चेहरों वाली कन्नोन बोधिसत्व की इस मंदिर की प्रमुख पूजा की मूर्ति, अब जापान की राष्ट्रीय संपदा है और ऐसा कहा जाता है कि इसे एक भारतीय बौद्ध मूर्तिकार ने महारानी कोम्यो के प्रतिरूप को मूर्ति में नक्काशी करके बनाया था.

882 होक्केजी-चो, नारा सिटी
☎ 0742-33-2261
साल-भर, प्रत्येक दिन खुला रहता है
◔ 9:00-17:00 ¥ 500 येन (आम तौर पर, केवल प्रमुख हॉल के लिये)
🚆 जे-आर/किंतेत्सु नारा स्टेशन से साइदाईजी और कोकु-जिएताई की तरफ जाने वाली बस से होक्केजी बस स्टॉप से उतरते ही तुरंत है

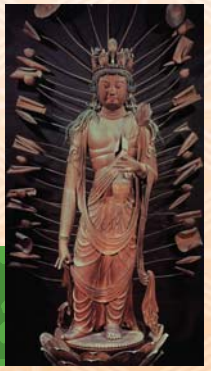

कन्नोन बोधिसत्व की ग्यारह चेहरे की मूर्ति
गंधार के राजा ने जिनको स्वप्न में एक संदेश से यह बताया गया कि महारानी कोम्यो, कन्नोन की अवतार है, एक शिल्पकार मोंदोशी को महारानी के प्रतिरूप को मूर्ति में बनाने के लिये भेजा. भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने एक बार कहा कि उन्हे लगता है कि यह एक सत्य कहानी हो सकती है. दर्शक साधारणतः चंदन की लकड़ी में गढ़े हुये प्रतिरूप को देख सकते हैं जिसे भारत सरकार ने दिया था.

हासे-देरा मंदिर

Hasedera Temple

पहाड़ों पर बने हुये खूबसूरत मन्दिर जो कि चारों ऋतुओं में रंग-बिरंगे फूलों से भरे रहते हैं.

इस खूबसूरत मंदिर को माउंट हात्सुसे के बीच में बनाया गया है. 399 सीढ़ी के हॉल के रास्ते से ऊपर जाकर, दर्शक मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्य को प्रमुख हॉल से देख सकते है. सदियों से, यह मंदिर दूर-दूर तक फूलों की खूबसूरती को देखने के लिये जाना जाता है. यहाँ का अदभुत प्राकृतिक दृश्य जैसे चेरी-ब्लॉसम, रंग-बिरंगे फूलों वाले पौधे, अजीसाई के फूल, रंग-बिरंगी पत्तियाँ और बर्फ से ढके होने के समय का दृश्य दर्शकों के मन को मुग्ध कर लेता है.

731-1 हासे, सकुराई सिटी ☎ 0744-47-7001 साल-भर, प्रत्येक दिन खुला रहता है
◔ 8:30-17:00 (अप्रैल से सितम्बर) 9:00-16:30 (अक्टूबर से मार्च) ¥ 500 येन
🚆 किंतेत्सु हासेदेरा स्टेशन से 15 मिनट का पैदल रास्ता है.

प्रसंग जानकारी

बोधिसेन एक ब्राह्मण आचार्य थे और इनका नारा से काफी गहरा सम्बंध था.

करीब 1250 साल पहले, एक ब्राह्मण आचार्य, राजकीय आदेश पर भारत से नारा को आये. उनका नाम बोधिसेन था. सन् 752 ई. में तोदाईजी मंदिर में बुद्ध की विशाल मूर्ति के उद्घाटन समारोह के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के पश्चात, जो कि उस समय का महान राजकीय कार्य था, उनका नाम सारे जापान में प्रसिद्ध हो गया. ऐसा कहा जाता है कि बोधिसेन ने बौद्ध धर्म एवं भारतीय संस्कृति के बारे में भी नारा के लोगों को जानकारी दी. उनका सन् 760 ई. में, नारा शहर के दाईअनजी मंदिर में निधन हो गया और उनकी समाधि रयोसेनजी मंदिर में बनाई गयी थी. रयोसेनजी मंदिर का नामकरण बोधिसेन के द्वारा किया गया था जिन्होनें ये बताया कि इस स्थान का नक्शासाजी भारत के ग्रिध्राकुट पर्वत से मिलता है जहाँ पर भगवान बुद्ध ने अपना सबसे पहला धर्मोपदेश दिया था. आज भी जापान के लोग बोधिसेन के गुणों की प्रशंसा करते हैं और उनका महान नाम पीढ़ी दर पीढ़ी चलता चला आ रहा है.

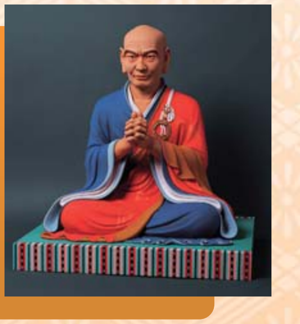

तोदाईजी बोधिसेन की मूर्ति